जो रास्ता चुना नहीं मैंने

Translated By: Ravia Gupta
Lecturer
Department of Journalism & Mass Communication

वहां दोराहा था पीले जंगल की और जाता
मैं असमर्थ था एक साथ दोनों रास्तों पे चलने से
ऐसा पथिक नहीं था मैं, मैं वहां खड़े खड़े देखता रहा उस दोराहे को
और देखता रहा उस रस्ते को कई दूर तक वो हर रस्ता जो मुड़ रहा था दूर छिपी झाड़ियों में कहीं
फिर मैंने दूसरा रास्ता चुना, संभावित दोनों ही रस्ते सही थे
और शायद बेहतर दावा करते हुए,
क्योंकि वह रास्ता घास युक्त था और घिसा भी नहीं
हालाँकि जहा तक वहां से गुज़रने की बात थी
वास्तव में लगभग दोनों रस्ते एक जैसे घिसे दिखाई देते,
और उस सुबह तो दोनों एक समान रूप से लगे
बिना कुचले पत्तों से डके दोनों ही रास्ते
आह, मैंने वो पहला रास्ता छोड़ दिया किसी और दिन के लिए !
यह जानते हुए की एक रास्ता मिल जाता है अक्सर एक और रास्ते से,
मुझे संदेह है की मुझे वापसी करनी चाहिए कभी !
एक आह भरकर कहूंगा में
भविष्य में
इस दोराहे के बारे में जो था जंगल में, जहाँ मैंने वो रास्ता चुना
जिस पर कभी-कभार ही चला था कोई
जिससे मैँ बन गया नितान्त
एक अलग आदमी!

राह जेडी चुनी नी

Translated By: Kumerjit Chajgotra
Lecturer
Department of Journalism & Mass Communication

टटूऐ थमा प्रोचेदे, प्लाह दे जाड़े
टूरने आसते, लियांह दो हियां ,
दो लियां जेडी जंदी हियाँ ,
कूते दूर द्राडे, पलैसे ईच प्लोचोएदी
इने गेलें गि आखिर तगर, आऊं खडो ई तक्का
आखिर किन्ने जातरू, आई खड़ो ते हो ने
इने दोएं लियेह कोल, ते चोन कित्ती होनी
इक लिह
मैं भी चुनी लेती इक लिह, गेयिं गेयीं लगी पेई टूरन
ऐ लीह प्रोचेदी ही , पुमबले दे खब्बले कन्ने, काह, जेडा गोडे गोडे चडी , जियां चाहंदा हा
मेरे हत्थे गि कोटि ले, ते कन्ने इच आखदी
कट्ट लोके सानु चुनेया ऐ इस गेलेगि ।
इथेना कोई निशान हा , ना कोई आने जाने से सबूत
आऊं काबरी गई, चुसमुसे सवेरे जि याँ
आऊं एकली ही इथे मने गाल उठी जे
खरे दूई ली ह खरी ही , काश उस लीह आऊं टूरद
जी कित्ता आऊं परतो ई जा , ते करा परतिऐ नमा सफ़र
नमी लीह ऊपर,
जा आऊं च्ल्दी र'वा इसे लिहै दे राहे
ते खरे आऊं कदे, दूर कुते
डलदी सोए दी शा मी , बैसी सोचगी

कट्ट टूरे दे लीह, आसते चुक्केदे गइं गईं
दा गै सारा फर्क हा ।

Original Text

The Road Not Taken

By Robert Frost

Two roads diverged in a yellow wood,
And sorry I could not travel both
And be one traveler, long I stood
And looked down one as far as I could
To where it bent in the undergrowth;

Then took the other, as just as fair,
And having perhaps the better claim,
Because it was grassy and wanted wear;
Though as for that the passing there
Had worn them really about the same,

And both that morning equally lay
In leaves no step had trodden black.
Oh, I kept the first for another day!
Yet knowing how way leads on to way,
I doubted if I should ever come back.

I shall be telling this with a sigh
Somewhere ages and ages hence:
Two roads diverged in a wood, and I—
I took the one less traveled by,
And that has made all the difference.